रिपोर्ट क्रश्ड: सारांश

हाथ बढ़ायें, हाथ बचायें

अगस्त 2019 में सेफ इन इंडिया फाउंडेशन (SII) ने अपनी पहली दुर्घटना रोकथाम रिपोर्ट "Crushed 2019" जारी की, जिसमें गुड़गाँव में ऑटो-सैक्टर सप्लाई चेन में चोटग्रस्त 1369 श्रमिकों से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण किया गया था. वाहन उद्योग और सरकार में शामिल हितधारकों ने निष्कर्षों को स्वीकार किया है.

अब हम आपके साथ अगला वार्षिक संस्करण "Crushed 2020" साझा कर रहे हैं, जिसमें 1873 चोटग्रस्त श्रमिकों पर आधारित विश्लेषण शामिल है. इनमें से गुड़गाँव और फरीदाबाद के 504 श्रमिक वे हैं जिनकी SII ने पिछले वित्तीय वर्ष 2019-20 में मदद की.

ध्यान देने योग्य बात ये है कि श्रमिकों की सुरक्षा बेहतर बनाने की SII की कोशिशें पिछले वित्तीय वर्ष के मध्य में ही शुरू हुई थीं, इसलिये कोई भी सुधार वित्तीय वर्ष 2020-21 से ही दिखाई देने की उम्मीद की जा सकती है.

जहाँ राष्ट्र आत्मनिर्भरता हासिल करने का प्रयास कर रहा है, "मेक इन इंडिया" के उद्देश्य को सुरक्षित तरह से प्राप्त करने के लिये निजी क्षेत्र, नियामकों, श्रमिकों और गैर सरकारी संगठनों को साथ मिल कर काम करने की ज़रूरत है.

मुख्य निष्कर्ष

- **गुड़गाँव और फरीदाबाद में चोटों की गंभीरता और दुर्घटना के बाद उपचार की स्थिति खराब हुई है.**
  - चोटग्रस्त श्रमिक अभी भी ज़्यादातर युवा 52%, प्रवासी 88%, अनुबंधित 65% और किसी भी मज़दूर संघ से असम्बद्ध (लगभग सभी) हैं.
  - चोटों की गंभीरता बढ़ी है. हाथ/अंगुलियाँ कटने के मामले 61% से बढ़ कर 70% हो गये.
  - दुर्घटना के बाद ESIC कार्ड प्राप्त करने वाले श्रमिकों की संख्या 65% से बढ़ कर 81% हो गई.

Safe in India Foundation ("SII") provides free of charge assistance to injured workers, mostly in auto-sector supply chain, currently in Gurugram-Manesar, in their ESIC healthcare and claims. SII activities are funded by supporters and donors, mostly from IIM Ahmedabad and IIT Roorkee, concerned about the well-being and productivity of millions of Indian workers at risk. SII has no income expectations or commercial partnerships. The co-founders do not charge SII for their time and services.

- **यद्यपि तीन सबसे बड़े क्षेत्रीय वाहन निर्माताओं (OEMs) में ज़्यादातर दुर्घटनायें 95% दर्ज की गईं, लेकिन वास्तव में सम्पूर्ण ऑटो क्षेत्र ही इस समस्या से जूझ रहा है.**
  - मारुति, हीरो और हौंडा के सप्लाई चेन में 95% दुर्घटनायें दर्ज की गईं.
  - पिछले तीन सालों में हीरो की दुर्घटनाओं में सबसे ज़्यादा 13% की वृद्धि हुई.
  - लेकिन लगभग 19% दुर्घटनायें (जिनमें से अनेक ऊपर के 95% में शामिल हैं) अन्य वाहन निर्माताओं (OEMs), जिनमें अशोक लीलैंड, आइशर, स्कॉर्ट, जेसीबी, महिंद्रा, टाटा, टीवीएस और यामाहा शामिल हैं, की सप्लाई चेन में हुईं.
  - सेफ इन इंडिया के चोटग्रस्त श्रमिकों के डाटाबेस में शामिल लगभग एक-चौथाई कम्पनियाँ ACMA (Automobile Component Manufacturers Association) की सदस्य हैं.
  - आदतन दोषियों में कोई सुधार नहीं देखा गया. एक-तिहाई दुर्घटनायें केवल 31 कम्पनियों में दर्ज की गईं.

- **पावर प्रैस दुर्घटनायें बढ़ गईं, और उनकी वजहें और बदतर हो गईं.**
  - कुल दुर्घटनाओं में पावर प्रैस का हिस्सा 52% से बढ़ कर 59% हो गया.
  - पावर प्रैस में सेफ्टी सैंसर का अभाव/ठीक से काम न करने? प्रणाली की खराबी के मामले 82% से बढ़ कर 88% हो गये.

- **नियम-कानून अपर्याप्त हैं और इनका अनुपालन लचर है. दुर्घटनाओं की सही सूचना न देना जारी है.**
  - हरियाणा की अंतिम सार्वजनिक रूप से उपलब्ध 2017 की दुर्घटना जानकारी में प्रदर्शित दुर्घटनाओं की संख्या SII की जानकारी में पिछले तीन वर्षों में आई औसत दुर्घटनाओं की संख्या का केवल 10% है.
  - 2011 से 2017 के समय के लिये कोई सार्वजनिक आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, जबकि हरियाणा में फैक्ट्री कानून का उल्लंघन करने पर केवल 3000 रुपयों का मामूली दंड निर्धारित था.
  - पावर प्रैस के भारतीय मानक असमान हैं और सुरक्षा ज़रूरतों के एक प्रभावशाली ढाँचे का निर्माण नहीं करते.
  - केंद्र सरकार ने SDG (सतत विकास लक्ष्य) के विरुद्ध कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं करने का फैसला किया है (श्रमिक सुरक्षा की जानकारी देने के लिये सूचकांक 8.8)

- **Crushed 2019 में उठाये गये मुद्दों पर OEMs का जवाब मिला-जुला रहा. आशा करते हैं कि इसमें जल्दी ही सुधार होगा.**
  - मारुति-सुज़ुकी ने SII के साथ मिल कर अच्छा काम किया और अपनी सप्लाई चेन की सुरक्षा व्यवस्था में सुधार के लिये शुरूआत की है.
  - दुर्भाग्य से हीरो और हौंडा की प्रतिक्रिया इतनी सकारात्मक नहीं रही.
  - SIAM (Society for Indian Automobile Manufacturers) और ACMA (Automobile Component Manufacturers Association) ने SII के साथ मिल कर काम करना शुरू किया है और जल्दी ही कुछ ज़रूरी कदम उठाये जाने की आशा की जा सकती है.
  - महिंद्रा, आइशर और मारुति ने उनकी व्यापारिक ज़िम्मेदारी रिपोर्ट पर हमारी चुनौती पर प्रतिक्रिया दी है. हीरो, हौंडा और बजाज के जवाब का इंतज़ार है.

- **इसी तरह केंद्र और राज्य सरकारों, संबंधित संस्थाओं और अन्य संबंधित मंत्रालयों की तरफ से प्रतिक्रिया मिली-जुली रही. आशा करते हैं कि ज़रूरी कदम शीघ्रता से लिये जायेंगे.**
  - केंद्र सरकार के श्रम विभाग ने SII के साथ मिल कर कुछ अच्छा काम किया और DG FASLI केंद्र सरकार का सुरक्षा विभाग) के तहत एक अंतरिम समिति का गठन किया.
  - OSH लेबर कोड मसौदा समिति ने प्रारूप पर SII के साथ विस्तार में चर्चा की. अंतिम मसौदा हमें संसद द्वारा कोड स्वीकृत किये जाने पर पता चलेगा.
  - हरियाणा सरकार ने अभी SII के साथ काम करने में ज़्यादा सक्रियता नहीं दिखाई है लेकिन SII के सुझाव मान लिये हैं और दुर्घटनाओं पर एक समिति बनाने की योजना की घोषणा की है.
  - MSME मंत्रालय ने कुछ सुरक्षा पहलों को लागू करने के लिये SII के साथ एक समझौता पत्र MOU पर हस्ताक्षर किये हैं.

एक अच्छी शुरूआत, पर अभी राह लंबी है. रिपोर्ट में दिये सुझावों में से कुछ महत्वपूर्ण

सुझाव:

- **केंद्र सरकार**: औद्योगिक सुरक्षा कानूनों को कड़ाई से लागू करना होगा. साथ ही एक ऐसा OSH कोड जो वास्तव में कार्य संबंधी दुर्घटनाओं और बीमारियों को कम

करे, साथ ही ऑटो-सैक्टर सप्लाई चेन पर सरकार और उद्योग के एक संयुक्त कार्य दल का गठन.

- **हरियाणा राज्य सरकार**: नई सुरक्षा समिति के लिये एक स्पष्ट और प्रभावी योजना का निर्माण करना.
- **मारुति, हीरो और हौंडा**: सप्लाई चेन सुरक्षा पर एक संयुक्त NCR कार्यदल का गठन करना.
- **SIAM और ACMA**: देश के सभी ऑटो निर्माण केंद्रों को पेशेवर बनाने और सुरक्षा माहौल में सुधार करने के लेय एक राष्ट्रीय कार्यदल का गठन करना.
- **कौशल विकास मंत्रालय**: श्रमिकों के लिये कौशल विकास केंद्रों की स्थापना करना और इसमें सुरक्षा को जगह देना.
- **MSME मंत्रालय**: ऑटो-सैक्टर सप्लाई चेन में सुरक्षा के प्रति जागरूकता और कौशल में सुधार करना.
- **नीति आयोग**: SDG के सूचकांक 8.8 के विरुद्ध प्राप्य लक्ष्य निर्धारित करना

- **SII सभी हितधारकों के सामने ये मुद्दे उठाना और उनके साथ मिल कर काम करना जारी रखेगी.** आने वाले समय में SII
- ज़्यादा से ज़्यादा चोटग्रस्त श्रमिकों को उनकी ESIC चिकित्सा सेवा और हितलाभ दिलवाने में मदद करती रहेगी.
- शीर्ष दस सूचीबद्ध ऑटो कम्पनियों के लिये NGRBC (National Guidelines of Responsible Business Conduct) अनुपालन रिपोर्ट प्रकाशित करेगी.
- पावर प्रैस दुर्घटनाओं और उनके लिये प्रस्तावित समाधानों पर रिपोर्ट प्रकाशित करेगी.
- श्रमिकों की सुरक्षा संबंधी जागरूकता, खासकर पावर प्रैस पर, बढ़ा कर उनको मज़बूत करेगी.

ये तो बस शुरूआत है, अभी लंबा रास्ता तय करना है, श्रमिकों और भारतीय उद्योग की सफलता के लिये सभी हितधारकों को सर्व हिताय (सबकी बेहतरी) के लक्ष्य के साथ मिल कर काम करने की ज़रूरत है.

दुनिया की सबसे अच्छी माँ

नीतू देवी, 37 वर्ष

नीतू देवी बहुत सारे रिश्तेदारों के साथ रहती हैं. सब मुश्किल में एक-दूसरे की मदद करते हैं. नीतू का बचपन उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में बीता. गरीब माता-पिता और फिर लड़की होने का अभिशाप, दूसरी कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी. 15 वर्ष की छोटी सी उम्र में शादी हो गई. बिना दहेज की शादी और नशे का आदी, बेरोज़गार पति, जीवन आसान न था. अपने तीन बच्चों का भविष्य सँवारने नीतू 2011 में गुड़गाँव आ पहुँची. एक निर्यात कम्पनी में मशीनों पर काम करने लगीं. पावर प्रैस मशीन पर काम करते समय वह तीन बार हादसों का शिकार होकर अपनी कई अंगुलियाँ गँवा चुकी है. फिर भी परिवार का पोषण करने के लिये अभी भी इसी मशीन पर काम करने पर मजबूर हैं. गाँव में पढ़ रही उनकी बेटी काजल ने दसवीं कक्षा पास कर ली है और कम्प्यूटर पर काम करना सीख रही है. वह एक बेटे की तरह अपनी माँ की सेवा करना चाहती है. माँ के हाथों की गुजिय खाते काजल कहती है- मेरी माँ दुनिया की सबसे अच्छी माँ है.

यादों का गहना

आलमगीर अंसारी, 32 वर्ष

अंगूठी पहनने का बेहद शौक होने के बाद भी अब आलमगीर इससे बचते हैं. अंगूठी पहनो तो लोग उनकी कटी हुई अंगुली आसानी से देख लेते हैं और अनचाहे कटाक्ष कर बैठते हैं. उनकी दायें हाथ की बीच वाली अंगुली लॉक डाउन से एक दिन पहले ही कट गई थी. आलम अपने घर गाज़ीपुर से मुम्बई पावर लूम पर काम करने गये थे. ये दिहाड़ी का काम था और अपनी बीवी और दो बच्चों को वहाँ बुलाना संभव नहीं हो रहा था. वह एक स्थाई नौकरी की तलाश में 2019 में मानेसर आ गये. कम्पनी में मशीन पर काम करते हुए महसूस हुआ कि ये ठीक काम नहीं कर रही है लेकिन सुपरवाइज़र ने उन्हें मशीन चलाते रहने पर मजबूर किया. रात में एक लोहे की छड़ उनके हाथ पर गिर पड़ी और अंगुली कट गई. आलम को हैल्पर की तरह नौकरी पर रखा गया था लेकिन मशीन चलाने पर मजबूर किया जाता था. कोविड-19 के दौरान इलाज में बहुत मुश्किलें हुईं. ज़ख्म अब भर गया है और आलम ने उसी कम्पनी में उसी मशीन पर काम करना फिर शुरू कर दिया है, परिवार का पेट जो पालना है. अंगूठी पहनना अब उनके लिये एक सपने की तरह रह गया है.

जहाँ दर्द ही दवा बन जाता है

साहस की प्रतिमूर्ति: सुषमा पांडे, 40 वर्ष

"चुलबुल पांडे", बच्ची की शर्मीली मुस्कान में शरारत भी छिपी है. उसका जन्मदिन 2 अक्तूबर है गाँधीजी की तरह. "इसका असली नाम स्वस्तिका पांडे है", माँ सुषमा पांडे बताती है. "इसकी नानी इसे चुलबुल कहती हैं, ये बचपन से इतनी शरारती जो है."

उनके चेहरे पर प्यार के साथ चिंता भी दिख रही है. सुषमा की बेटी बड़ी हो रही है. उसे अकेला छोड़ काम पर जाना पड़ता है. उन्होंने इसे इलाहाबाद में पढ़ाने के लिये अपने एक रिश्तेदार से बात की है. कारखानों में काम करते हुए सुषमा को दो बार चोट लग चुकी है, जिसमें वह हाथ और पैर की कई अंगुलयाँ खो बैठी हैं. अभी वह मास्क बनाने के एक कारखाने में काम कर रही हैं. "सर, मुझे अपने बच्चों को अच्छे से पढ़ाना है तो काम तो करना ही पड़ेगा. पति के घर का तो कोई सहारा है नहीं."

बिहार के कटिहार में जन्मी सुषमा की शादी कम उम्र में हो गई थी. ससुराल में उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता था. माँ बन जाने के बाद उनकी ज़िम्मेदारियाँ और बढ़ गईं. बच्चों के लिये अच्छी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिये उन्होंने काम करने का निश्चय किया और 2015 में मानेसर आ गईं. बेटी उनके साथ है जबकि बेटा गाँव में नानी के पास है. सुषमा अपनी बेटी को इंस्पैक्टर या मजिस्ट्रेट बनाना चाहती हैं. इस छोटे से घर की असली सजावट एक माँ की अदम्य इच्छाशक्ति और उसकी बेटी के आसमान छूते उत्साह में निखर रही है.

सपनों बनाम निराशाओं की जंग

श्याम देव, 22 वर्ष

श्याम देव पंडित लोगों से दूर ही रहना पसंद करते हैं. उनकी कटी हुई अंगुली पर कितनी ही बार लोग संबेदनहीन कटाक्ष कर बैठते हैं. मानेसर के एक कारखाने में पावर प्रैस मशीन पर काम करते हुए उनके बायें हाथ की दो अंगुलियाँ कट गई थीं. उससे भी ज़्यादा दर्द उन्हें लोगों की बातों से होता है.

श्याम पैसे कमाने बिहार के जमुई गाँव से मानेसर आये थे. उन्हें एक स्थाई नौकरी का प्रस्ताव मिल गया और वह खुश हो गये. लेकिन ये खुशी कुछ दिनों की मेहमान थी, अचानक ही वह हादसे का शिकार हो गये. छः महीने पहले गाँव में जनमे अपने बेटे को देखने के लिये श्याम उतावले हो रहे हैं. वह गाँव में चूड़ियों की दुकान शुरू करने के लिये पैसो की व्यवस्था करना चाहते हैं.

तपती गर्मी के महीने में चिड़िया के घोंसले से बने एक मकान की सबसे ऊपरी मंज़िल के छोटे से कमरे में श्याम अपनी ही एक जंग लड़ रहे हैं- सपनों और निराशाओं के बीच की जंग.